

पद १०३ (हिंदी)

(राग: भूप, जि - ताल: त्रिताल)

हर हर हरनी सधर भरनी जंगल बीच तू मंगल करनी ॥ध्रु.॥ दुष्टनको
भक्षा कर भक्तनको रक्षा कर नाणिक दीन की इच्छा पूर्ण कर
जननी ॥१॥